बडा,
अजीब सा लगता है
किसी जादू कि तरह
जब उपर, जी हाँ, कुछ ऐसी उचाँई से
जहाँ से तुम देख पा रहे हो
नीचे जमीन पर और
उसके बीच में भी

जहाँ,
बादल लटकते मिलते हैं हवा में
अपने पूरे विस्तार में
दृष्टी के किसी भी छोर तक

जहाँ,
अंदर मशीन का निरंतर शोर है
और तंग कपडों को बार–बार संभालती केबिन क्रियू
की प्रायोजित मुस्कुराहटें
अभिवादन का मशीनी संस्करण लिये
दिल को बैठा देने वाले एयर ट्रेप्स
बाहर केवल बादल अपने पूरे स्वरूप में
कांतिमय है बिना किसी लाग–लपेट के

बादल,
मेरी पूरी जिन्दगी में मैने इतने सुहावने नही देखें
शायद, इतने चमकीले सफेद / श्वेत / धवल या कुछ और्
कि मुझे अपने शब्द्ज्ञान पर होने लगा अफ़्सोस
कि अब तक हम क्यों नही रच पाये एक शब्द?
जो परिभाषित कर सके
बादलों के रंग को जिसे हम देखते हैं
इतने करीब से.

————————————————————————————

मुकेश कुमार तिवारी
14–मार्च–2008 / 01:30 दोपहर / इन्दौर–पूणे / किंगफिशर एयरलाईन्स्